स्नातक खण्ड-3
हिन्दी प्रतिष्ठा
प्रथम पत्र

प्रश्न : रहस्यवाद का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर जिस प्रकार छायावाद कोरे वस्तुवाद से आगे जाता है, और प्रकृति में मानवी भावों की छाया देखता है, उसी प्रकार रहस्यवाद छायावाद के आगे की वस्तु है। वह प्रकृति और मनुष्य के भीतर की व्यापक सत्ता के साथ एक भावात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है। रहस्यवाद में एक आत्म-निवेदन रहता है। छायावाद में शैली की प्रधानता है रहस्यवाद में विषय की, वैसे दोनों ही भाव प्रधान हैं। शायद इसलिए आचार्य शुक्लजी ने रहस्यवाद को छायावाद की ही एक प्रवृत्ति माना है।

रहस्यवाद नया नाम है, यद्यपि प्राचीन शास्त्रों में परा विद्या को रहस्य और गुह्य कहा गया है।

रहस्यवाद भाव प्रधान होने के कारण उसकी अभिव्यक्ति गीतों में ही हुई है। रहस्यवाद का सम्बन्ध पराविद्या से है। अंग्रेजी में ये लोग मिस्टिक कहलाते हैं, और कुछ लोग इनको सूफी कहते हैं। लोगों ने प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्ध को

महत्ता दी है।

इस प्रकार छायावाद के प्रथम उन्मेष के अनेक कवियों में अपनी बात को आध्यात्मिक रूप देना चाहा। इसलिए सभी छायावादी रहस्यवादी कहे जाने लगे पर वास्तव में दोनों में बहुत भेद है। छायावाद अपनी विशिष्ट विचारधारा विशेष आत्मिक, भाव संवेदना और विषद काव्यधारा है। किन्तु रहस्यवाद अपने मूल रूप में केवल आत्मा का परमात्मा के प्रति निवेदन है। रहस्यवादी के चित्र में किसी न किसी रूप में परम प्रेममय, परम आनन्दमय लीला निकेतन प्रिय का विश्वास अवश्य होना चाहिए।

रहस्यवाद के मूल में अद्वैतवाद नवीन उपमान योजना, लाक्षणिक प्रयोग, मूर्त-अमूर्त विधान दोनों में समान है। पर जहाँ छायावाद में जीवन-जगत राष्ट्रीय भावना, सुख-दुख, प्रकृति चित्रण, सेवा, त्याग करुणा आदि जीवन की उच्च सांस्कृतिक विषयक्षेत्र की व्यापकता है, तो रहस्यवाद में केवल आत्मा की परमात्मा के लिए तड़प है।

— X —